



NEERAJ®

भारतीय समाजशास्त्र (Sociology of India)

B.S.O.C.-132

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय समाजशास्त्र (Sociology of India)

Question Paper–June-2024 (Solved)	1
Question Paper–December-2023 (Solved)	1
Question Paper–June-2023 (Solved)	1
Question Paper–December-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved)	1

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	भारत में एकता और विविधता (Unity and Diversity in India)	1
2.	बदलता भारत (Changing India)	14
3.	जनजाति (Tribe)	29
4.	जाति (Caste)	39
5.	वर्ग (Class)	54
6.	परिवार, विवाह और नातेदारी (Family, Marriage and Kinship)	68
7.	धर्म और समाज (Religion and Society)	88

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
8.	दलित आंदोलन (Dalit Movements)	98
9.	लिंग आधारित आंदोलन (Gender Based Movements)	106
10.	जनजातीय एवं नृजातीय आंदोलन (Tribal and Ethnic Movements)	120
11.	साम्प्रदायिकता (Communalism)	132
12.	धर्मनिरपेक्षता (Secularism)	142



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय समाजशास्त्र
(Sociology of India)

B.S.O.C.-132

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. जजमानी व्यवस्था की जातियों की अंतःनिर्भरता की एक परंपरा के रूप में चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'परस्पर निर्भरता (Interdependence) की परंपरा', पृष्ठ-6, प्रश्न 8, 'परस्पर निर्भरता की परंपरा'

प्रश्न 2. आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज में क्या परिवर्तन आया है? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'विकास और परिवर्तन आधुनिकीकरण के रूप में', पृष्ठ-21, प्रश्न 5

प्रश्न 3. सेंट्रल इंडिया (मध्य भारत) में जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-30, 'मध्य भारत में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ'

प्रश्न 4. घुरे के अनुसार जाति व्यवस्था के लक्षण क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-42, प्रश्न 1

प्रश्न 5. भारत में वर्ग के गठन पर अंग्रेजी हुकूमत के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-54, 'भारत में वर्ग निर्माण में अंग्रेजी शासन का योगदान'

प्रश्न 6. ब्रिटिश इंडिया में जनजातीय विद्रोहों के कारण एवं परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-120, 'जनजातीय आंदोलनों के कारण', पृष्ठ-121, 'जनजातीय आंदोलनों के विभिन्न चरण'

प्रश्न 7. दलित सुधार आंदोलन के संबंध में ज्योतिबा फुले के योगदान का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-100, 'ज्योतिबा फुले और दलित सुधार आंदोलन', पृष्ठ-103, प्रश्न 3

प्रश्न 8. नृजातीय आंदोलनों की प्रकृति एवं कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-122, 'नृजातीय आंदोलन', पृष्ठ-123, 'नृजातीय आंदोलनों का उदय', 'नृजातीय आंदोलनों के प्रमुख कारण'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारतीय समाजशास्त्र
(Sociology of India)

B.S.O.C.-132

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर अवश्य दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I

प्रश्न 1. भारतीय समाज में एकता और अनेकता के विविध पहलुओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'भारत में एकता की कड़ी', पृष्ठ-1, 'भारत में विविधता के रूप'

प्रश्न 2. आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को कैसे प्रभावित किया? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-17, 'उदारीकरण : निजीकरण तथा वैश्वीकरण', पृष्ठ-27, प्रश्न 6

प्रश्न 3. मध्य प्रदेश की जनजातियों के सम्मुख आने वाली चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-30, 'मध्य भारत में आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ'

प्रश्न 4. जाति की संकल्पना का वर्णन कीजिए। इसकी प्रमुख विशेषताओं की चर्चा, घुरिये के लेखन को ध्यान में रहते हुए कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-42, प्रश्न 1

भाग-II

प्रश्न 5. विवाह संस्थानों का इसके विभिन्न प्रकारों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-72, 'विवाह संस्था'

प्रश्न 6. समाज में धर्म की क्या भूमिका है? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-91, प्रश्न 1 तथा प्रश्न 3

प्रश्न 7. भारत में चलाए जाने वाले नृजातीय आन्दोलनों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-123, 'नृजातीय आंदोलन के प्रकार'

प्रश्न 8. धर्मनिरपेक्षता क्या है? भारतीय धर्मनिरपेक्षता, पश्चिमी समाज में व्याप्त धर्मनिरपेक्षता से किस तरीके से भिन्न है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-144, 'भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ', पृष्ठ-149, प्रश्न 3



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

भारतीय समाजशास्त्र

Sociology of India

भारत में एकता और विविधता (Unity and Diversity in India)



परिचय

विविधता में एकता की अवधारणा का उपयोग 400-500 ईसा पूर्व में उत्तर अमेरिका और अन्य समाजों के स्वदेशी लोगों द्वारा किया गया था। आधुनिक पश्चिमी संस्कृति में यह प्राचीन ग्रीस और रोम की सभ्यताओं में विकसित ब्रह्मांड की कुछ जैविक अवधारणाओं में एकता को अलग-अलग व्यक्तियों या समूहों के बीच आत्मीयता और समत्व की अभिव्यक्ति के रूप में विभिन्न धार्मिक और राजनीतिक समूहों द्वारा जनप्रसिद्ध नारे अथवा आदर्श वाक्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसका अभिप्राय अलग-अलग धर्म, जाति, समुदाय आदि के उपरांत भी एकरूपता से रहना है।

भारत एक विविधतापूर्ण देश है। इसके विभिन्न भागों में भौगोलिक अवस्थाओं, निवासियों और उनकी संस्कृतियों में काफी अंतर है। कुछ प्रदेश अफ्रीकी रेगिस्तानों जैसे तप्त और शुष्क हैं, तो कुछ ध्रुव प्रदेश की भांति ठण्डे हैं।

कहीं वर्षा का अतिरेक है, तो कहीं उसका नितान्त अभाव है। तमिलनाडु, पंजाब और असम के निवासियों को एक साथ देखकर कोई उन्हें एक नस्ल या एक संस्कृति का अंग नहीं मान सकता। देश के निवासियों के अलग-अलग धर्म, विविधतापूर्ण भोजन और वस्त्र उतने ही भिन्न हैं, जितनी उनकी भाषाएं या बोलियां। इतनी और इस कोटि की विभिन्नता के बावजूद सम्पूर्ण होता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

एकता और विविधता की अवधारणा

विविधता का अर्थ

विविधता का अर्थ है सामुहिक असमानता। इसमें लोग अलग-अलग वर्ग में विभाजित होते हैं वो चाहे, धर्म के आधार पर या भाषा या फिर वैविकीय आधार पर हो सकते हैं। विविधता शब्द एकरूपता के विपरीत होता है, एकरूपता का अर्थ है एक विशेष

प्रकार की समरूपता जो पूरे समूह की विशेषता होती है जैसे एक विद्यालय के छात्र, पुलिस बल के सदस्य या सैन्य बल जो एक ही प्रकार के वस्त्र पहनते हैं, जिसे यूनिफार्म कहा जाता है। विविधता की भांति एकरूपता भी एक सामुहिक संकल्पना है। एक समान विशेषताओं वाला व्यक्तियों का समूह, चाहे वो भाषा धर्म या किसी और आधार पर हो वो एकरूपता को दर्शाता है। किंतु व्यक्तियों के ऐसे समूह जो अलग-अलग प्रजातियों, धर्मों तथा संस्कृतियों से संबंधित हो तो वे विविधता को दर्शाते हैं। भारत विभिन्नताओं का देश है जहाँ प्रजातियों, धर्मों, भाषाओं, जातियों और संस्कृतियों की विविधता पाई जाती है।

एकता का अर्थ

एकता एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो समाज के सदस्यों को एक साथ बांधकर रखती है। एकता और एकरूपता में अंतर होता है। एकरूपता का अर्थ है एक जैसा अर्थात् सभी में एक समान विशेषता किंतु एकता में ऐसा नहीं होता। एकता का जन्म एकरूपता से हो सकता है। दखॉइम ने ऐसी एकता को यात्रिक पारस्परिक निर्भरता कहा है।

इस प्रकार की एकता जनजातीय समाजों तथा पारस्परिक सामाजों में देखने को मिलती है। किंतु जो पारस्परिक निर्भरता है जो आधुनिक समाजों की विशेषता में मुख्य बात यह है कि एकता एकरूपता पर आधारित हो ऐसा जरूरी नहीं है, एकता समाज को दर्शाती है। एकता एक बंधन की भांति है जो अलग-अलग समूहों को एक साथ बांधकर रखती है।

भारत में विविधता के रूप

भारत में विभिन्न प्रकार की विविधताएं हैं जोकि भाषा, धर्म, जाति और प्रजातियों पर आधारित हैं।

प्रजातीय विविधता

प्रजाति ऐसे व्यक्तियों का समूह होता है जिनकी शारीरिक विशेषताएं जैसे त्वचा का रंग, नाक का आकार, बालों के प्रकार

2 / NEERAJ : भारतीय समाजशास्त्र

आदि एक जैसे होते हैं। हरबर्ट रिजले द्वारा भारत के लोगों को सात प्रजातीय समूहों में बांटा गया है—(1) तुर्क-ईरानी, (2) भारतीय आर्य, (3) शक-द्रविड़, (4) आर्य-द्रविड़, (5) मंगोल-द्रविड़, (6) मंगोलाभ एवं (7) द्रविड़। इन सात समूहों को मूल तीन समूहों में बांटा जा सकता है, भारतीय आर्य, मंगोली एवं द्रविड़। हरबर्ट रिजले ने यह वर्गीकरण शारीरिक विशेषताओं के आधार पर नहीं बल्कि भाषा के प्रकारों के आधार पर किया था। वर्गीकरण की इन कमियों के कारण रिजले को आलोचना का सामना करना पड़ा। इसके पश्चात् जे.एच. हटन, डी.एन. मजूमदार तथा बी.एस. गुहा जैसे प्रशासनिक अधिकारियों व नृविज्ञानियों ने, अब तक किये गए क्षेत्रीय अनुसंधानों के आधार पर भारतीयों का अधुनातन प्रजातिय वर्गीकरण प्रस्तुत किया। हटन और गुहा का वर्गीकरण (1931) की जनगणना सक्रिया पर आधारित है। बी.एस. गुहा (1952) ने छः प्रजातीय समूहों के विषय में बताया है— (1) नीग्रीटो (2) प्रोटो-ऑस्ट्रोलायड, (3) मंगोलाभ, (4) भू-मध्य सागरीय, (5) पश्चिमी लघु कपाल और (6) उदीच्य।

नीग्रीटो

नीग्रीटो समूह के लोगों की त्वचा का रंग काला, बाल घुंघराले और हॉट मोटे होते हैं, जोकि अफ्रीका में पाये जाते हैं। दक्षिण भारत में कादार, इरूला तथा पनियन जैसी कुछ जनजातियां पाई जाती हैं जिनके लक्षण नीग्रीटो के समान है।

प्रोटो-ऑस्ट्रोलायड

इस प्रजाति में वे नृजातीय समूह शामिल हैं जो आस्ट्रेलिया के मूल निवासी तथा दक्षिणी एशियाई द्वीपों में रहने वाले जापान के आइनु, श्रीलंका के वेड्डु तथा मलेशिया के सकाई भी इसी समूह में आते हैं। मध्य भारत की जनजातियां भी इस प्रजाति समूह में आती हैं। एशिया की मूल प्रजातीय समूह मंगोलाभ प्रजाति है जिसमें उत्तरी और पूर्वी एशिया के लोग भी इसी में शामिल हैं। उदाहरण के तौर पर चीनी, जापानी, बर्मी, एस्कीमो तथा प्रायः सभी अमेरिकी भारतीय इसी प्रजाति के तहत आते हैं। भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र की जनजातियां लघुकपाल वाले मंगोलाभ समूह है। मंगोलाभ प्रजाति से थोड़ा-सा भिन्न प्रजातीय समूह ब्रह्मपुत्र घाटी में पाया जाता है।

भू-मध्य सागरीय

भू-मध्य सागरीय प्रजाति समूह की शारीरिक विशेषता यह है कि यह सफेद रंग वाली प्रजाति है। इनका कद नाटा होता है, दुबला पतला शरीर तथा सिर लंबा होता है। गहरा रंग इनकी शारीरिक विशेषताएं हैं।

पश्चिमी लघुकपाल निम्नलिखित तीन उपसमूहों में विभाजित है—

- (i) **अल्पेनॉयड**—यह उप समूह गुजराज में बनिया जाति के लोगों और बंगाल में कायस्थों में देखने को मिलता है। इनका सिर चौड़ा, कद मध्यम और त्वचा का रंग हल्का होता है।
- (ii) **डिनारिक**—यह उप समूह बंगाल के ब्राह्मणों और कर्नाटक के अ-ब्राह्मणों में देखने को मिलता है, जिनका सिर चौड़ा, नाक लंबी, कद लंबा तथा त्वचा का रंग गहरा होता है।

- (iii) **आर्मीनियाई तुल्य-बम्बई** की पारसी उप प्रजाति इस समूह में आती है, जिनकी शारीरिक विशेषताएं डिनारिक के समान होती हैं। सिर का पिछला भाग ज्यादा ही चिह्नित होता है तथा नाक उभरी हुई और पतली होती है।

उदीच्य

ये प्रजातियां यूरोप की स्कैंडिनेवियन देशों में पाई जाती हैं। इनका कद व सिर लंबा होता है, बालों व त्वचा का रंग हल्का होता है तथा आंखें नीली होती हैं। ये जाति समूह भारत में उत्तरी भारत के विभिन्न भागों विशेषकर पंजाब और राजपुताना में पाया जाता है। अनुसंधान से पता चलता है कि नॉर्डिक या उदीच्य प्रजाति के लोग एशिया से होते हुए शायद दक्षिण पूर्व रूस तथा दक्षिण पश्चिम साइबेरिया से भारत में आए हैं।

भाषायी विविधता

भारत में बहुत-सी भाषाएं बोली जाती हैं। जी.ए. ग्रियर्सन ने इस तथ्य की जाँच की और पाया कि भारत में 179 भाषाएं तथा 544 बोलियां बोली जाती हैं, दूसरी ओर 1971 की जनगणना के अनुसार यहाँ पर 1652 भाषाएं, मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं। भारत में यह सभी भाषाएं समान रूप से सब जगहों पर नहीं बोली जाती हैं। इनमें से कुछ जनजातीय भाषाएं कुल जनसंख्या के एक प्रतिशत हैं। भारतीय संविधान की आठवीं सूची में 18 भाषाएं दी गई हैं। 1991 की जनगणना की रिपोर्ट के अनुसार भारत में केवल 39.85% लोगों द्वारा हिंदी बोली जाती है। लगभग 8% द्वारा बंगला, तेलुगु तथा मराठी, तमिल व उर्दू 6.26% तथा 5.22% द्वारा बोली जाती है, बाकी सभी भाषाओं को 5% से भी कम लोग बोलते हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार इन सभी भाषाओं में से हिंदी 29.55 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा बोली जाती थी। बंगला, तेलुगु और मराठी, लगभग 8% से भी कम जनसंख्या द्वारा बोली जाती थी। संवैधानिक मान्यता प्राप्त ये सभी भाषाएं दो भाषा परिवारों की हैं। भारतीय आर्य और द्रविड़। मलयालम, कन्नड़, तमिल तथा तेलुगु ये चार प्रमुख भाषाएं हैं। भारत की कुल जनसंख्या का 75% आर्य परिवार की भाषा बोलता है जबकि 20 प्रतिशत जनसंख्या द्रविड़ परिवार की भाषा बोलता है। भाषा में इतनी विविधता पाई जाने के बाद भी भारत में कोई-न-कोई संपर्क भाषा बनी रही है, जैसे प्राचीनकाल में संस्कृत संपर्क भाषा रही और वर्तमान में हिंदी व अंग्रेजी भाषा का प्रयोग संपर्क तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाता है।

धार्मिक विविधता

भारत में अलग-अलग धर्मों के अनुयायी रहते हैं जैसे— हिंदु, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन तथा पारसी। प्रमुख रूप से भारत का धर्म हिंदू धर्म है। 1981 की जनगणना के अनुसार भारत में हिंदू धर्म को मानने वाले कुल जनसंख्या के 82.64% थे, इस्लाम के अनुयायी 11.35 थे। इसके बाद ईसाई धर्म, सिक्ख धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म का नम्बर था जिनके अनुयायी क्रमशः 1.43%, 1.96%, 0.71% तथा 0.48% थे। यहूदी, पारसी और बहाई धर्म को मानने वालों की संख्या बहुत कम थी। वर्ष 1991 में हिंदू धर्म के अनुयायियों की संख्या में थोड़ी कमी आई जबकि अन्य धर्मानुयायियों

में बढ़ोत्तरी हुई। इसके अलावा हर धर्म में कुछ सम्प्रदाय होते हैं जैसे हिंदू धर्म में शैव, शाक्त और वैष्णव सम्प्रदाय हैं। इनके अलावा धार्मिक पुनरुद्धार आंदोलनों से भी कुछ संप्रदायों की उत्पत्ति हुई है जैसे आर्य समाज, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन आदि। वर्तमान समय में साईबाबा, राधा स्वामी जैसे कुछ नये पंथ भी दृष्टिगोचर हुए हैं। इसी प्रकार से इस्लाम धर्म में शिया और सुन्नी, सिक्ख धर्म में नामधारी और निरंकारी, जैन धर्म में दिगम्बर व श्वेतांबर तथा बौद्ध धर्म में हीनयान और महायान जैसे सम्प्रदाय बने हुए हैं। इसके अलावा भारत में अन्य अल्पसंख्यक धर्मावलम्बि भिन्न-भिन्न राज्यों में फैले हुए हैं जैसे दक्षिण भारत के तीन राज्यों केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में तथा उत्तरपूर्व के नागालैंड राज्यों में ईसाई धर्म काफी प्रबल है। पंजाब में सिक्ख, महाराष्ट्र में बौद्ध और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात के साथ-साथ करीब-करीब पूरे देश में जैन धर्म पाया जाता है।

जातिगत विविधता

प्राचीन समय से भारतीय हिंदु समाज में कार्य विभाजन के आधार पर चार वर्गों में वर्गीकरण किया गया था, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिनके कार्य क्रमशः शिक्षण, प्रतिरक्षा, व्यवसाय एवं दासोचित्त सेवा के थे। वर्ग का सोपानात्मक संगठन सारे भारत में माना जाता है। भारत में करीब 3000 से अधिक जातियां हैं जिन्हें पदक्रम की दृष्टि से अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से निर्धारित किया जाता है। जाति व्यवस्था केवल हिंदू धर्म में ही प्रचलित नहीं है वरन् मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख जैसे अन्य धर्मों में भी जाति व्यवस्था का चलन है। मुस्लिमों में शेख, सैय्यद, मुगल, पठान जैसी अलग-अलग जातियां हैं। इसके अलावा इनमें तेली, धोबी, दर्जी जातियां भी पाई जाती हैं। ईसाइयों के बीच भी जातिगत चेतना पाई जाती है, क्योंकि भारत में काफी संख्या में लोगों ने धर्म परिवर्तन करके ईसाई धर्म को अपनाया। अतः जाति व्यवस्था की भावना कहीं-न-कहीं उनमें व्याप्त है। जातिगत विविधता के अलावा भी भारत में कई प्रकार की विविधता हैं जैसे जनजातीय ग्रामीण शहरी रहन-सहन, धार्मिक और क्षेत्रीय रीति-रिवाज पर आधारित विवाह तथा नातेदारी व्यवस्था आदि।

भारत में एकता की कड़ी

भारत में विविधताओं के बावजूद भी एकता का तत्व विद्यमान है।

भू-राजनीतिक एकता

राजनीतिक दृष्टि से भारत एक सार्वभौमिकता संपन्न राष्ट्र है। यहाँ एक छोर पर खुला समुद्र है तो दूसरे छोर पर हिमालय है। पूरे देश का प्रशासन एक ही संविधान तथा एक ही संसद द्वारा होता है। सभी भारतीय एक जैसी राजनीति, संस्कृति के सहभागी हैं जिसमें प्रजातंत्र, धर्म-निरपेक्षता तथा समाजवाद व्याप्त है। भारत की भू-राजनीतिक एकता के संकेत हमें प्राचीन समय से ही मिलते हैं जिसमें अशोक के शिलालेख, बुद्धकालीन स्मारक तथा अन्य स्रोत शामिल हैं। इतिहास में घटित कुछ एक घटनाओं के कारण भारत की भूमिगत सीमा पर बसे देशों से सीमा को लेकर चल रहे विवाद कभी-कभी एकता में बाधा खड़ी करते हैं, किंतु दूसरी ओर इन विवादों से भी एकता और दृढ़ होकर सामने आती है।

तीर्थाटनों की संस्था

भारत की एकता का दूसरा स्रोत है तीर्थस्थान, जो कि भारत के चारों कोनों उत्तर-दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में फैले हैं। यहाँ की तीर्थ यात्रा करने की पुरानी संस्कृति है जिसके कारण लोग देश के विभिन्न कोनों में जाते हैं। तीर्थाटन धार्मिक एकता की अभिव्यक्ति के साथ-साथ मातृभूमि के प्रति देश प्रेम की अभिव्यक्ति का स्रोत भी रहा है। इसने देश के भिन्न-भिन्न भागों में रहने वाले व्यक्तियों के बीच अंतःक्रिया और सांस्कृतिक बंधुता की भावना का विकास किया है। संचार साधनों के विकास के साथ ही भारत में पर्यटन को बढ़ावा मिला है तथा इसने तीर्थाटन को और मजबूत बनाया है।

समायोजन (Accommodation) की परंपरा

भारतीय संस्कृति की और विशेषता है, वो ही संश्लेषणात्मक गुण अर्थात् समायोजन और सहनशीलता का गुण। भारत में हिंदू धर्म को बहुसंख्या में अपनाया गया है और हिंदू धर्म समरूप धर्म नहीं है। अर्थात् बहुत से देवी-देवता, धर्मग्रंथ और देवालय विद्यमान हैं। अपने इसी बहुदेववादी गुण के कारण इसने ग्राम स्तर के देवी-देवताओं तथा जनजातीय आस्थाओं को अपनाया है। समाजशास्त्रीय ने मुख्य तौर पर हिंदू धर्म के दो रूप बताए हैं, एक है सुसंस्कृत तथा दूसरा है लोकप्रिय। सुसंस्कृत रूप वह है जो धार्मिक ग्रंथों में मिलता है तथा लोकप्रिय रूप वह है जो जनता की वास्तविक जिंदगी में दृष्टिगोचर होता है। इन दोनों रूपों को रॉबर्ट रेडफील्ड ने क्रमशः वृहत परंपरा और लघु परंपरा का नाम दिया है। रामायण और महाभारत वृहत परंपरा के रूप में है जबकि ग्रामीण देवता की पूजा-उपासना लघु परंपरा का रूप है। इससे यह ज्ञात होता है कि हिंदू धर्म एक उदारचेता धर्म है जिसमें ग्रहणशीलता और आत्म-सात करने का गुण है। उसके अलावा हिंदू धर्म, किसी का धर्म परिवर्तन कराने वाला धर्म नहीं है अर्थात् यह किसी को हिंदू धर्म अपनाने के लिए नहीं उकसाता और न ही यह अन्य धर्मों का विरोध करता है। समायोजन और सहनशीलता की इसी विशेषता के कारण यहाँ विभिन्न मत एक साथ अस्तित्व में हैं। सह-अस्तित्व की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। उदाहरण के तौर पर यहाँ समाज में हिंदू, मुसलमान सदैव मिलकर रहे हैं। अपने त्योहार, उत्सव सभी को साझा करते रहे हैं। एक-दूसरे की धार्मिक अनुभूतियों और अभिवृत्तियों का आदर किया जा सके। इसके लिए उन्होंने अपने चूल्हा और उपयोग के बर्तनों की व्यवस्था अलग-अलग ढंग की परंपरा से की है।

परस्पर निर्भरता (Interdependence) की परंपरा

भारतीय संस्कृति में परस्पर निर्भरता की पुरानी परंपरा रही है। जैसे कि यजमानी प्रथा जोकि कार्य की दृष्टि से विभिन्न जातियों को परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर रहने की व्यवस्था है। प्राचीन समय में यजमान अपने से कम संपन्न लोगों को या अपने अधीन कार्य करने वाले लोगों की आर्थिक व खाद्य सहायता करते थे, इसे ही यजमानी प्रथा कहा जाता है। अनुष्ठानात्मक मामलों, सामाजिक समर्थनों तथा आर्थिक विविधता से जुड़े होने के कारण यह संबंध अब ग्रामीण क्षेत्रों में ही देखने को मिलते हैं। आश्रयदाता या यजमानी संबंध उच्च जाति के लोगों के साथ होता है जैसे-बाह्यण, पुरोहित आदि जिनसे पूजा अनुष्ठान करवाने होते हैं। इसके अलावा

4 / NEERAJ : भारतीय समाजशास्त्र

निम्न जाति जिनमें नाई, धोबी, सफाई कर्मचारी आदि आते हैं जिनकी सेवाएं लेनी होती है। हमारा समाज इन अन्तः आश्रित संबंधों से बंधा हुआ है और एक-दूसरे की सहायता करता है। कोई भी एक जाति स्वालंबी नहीं होती, जीवनयापन में हमें तरह-तरह की चीजों की जरूरत होती है उसके लिए एक जाति-दूसरी जाति पर निर्भर रहती है। इसके अलावा धार्मिक समुदायों और सीमाओं के बाहर भी जातियाँ पाई जाती है। व्यवहारिक स्तर पर विभिन्न धार्मिक समूहों के व्यक्तियों के बीच यजमानी व्यवसाय अंतः संबंध स्थापित करती है। उदाहरण के तौर पर हिंदू समाज अपने कपड़ों की धुलाई के लिए मुस्लिम पर आश्रित हो सकता है या फिर मुस्लिम अपने कपड़ों की सिलाई के लिए हिंदू दर्जी पर आश्रित हो सकता है, इससे दोनों समुदाय एक-दूसरे के निकट रहते हैं। सम्राट अकबर ने भी अपने राज में दोनों धर्मों की अच्छी बातों को लेकर दीन-ए-इलाही नामक एक धर्म चलाया था। इसी क्षेत्र में कबीर, गुरुनानक और गांधी जी का योगदान सर्वविदित है। कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी हिंदू और मुस्लिम शैलियों का मिश्रण भारतीय इमारतों में देखने को मिलता है। अपनी इसी एकता को बनाए रखने के लिए भारतीय राज्यों ने स्वतंत्रता के पश्चात् कलांतर में राष्ट्रीय एकता हेतु एकरूप संस्कृति मॉडल की अपेक्षा सम्मिश्रित संस्कृति मॉडल को अपनाया। सम्मिश्रित संस्कृति मॉडल में एक अखंड राष्ट्रीय ढांचे के भीतर संस्कृति की बहुलता के संरक्षण और विकास को सम्मिलित किया जाता है। एकता के इतने उदाहरणों के बावजूद भी भारत में भाषा और साम्प्रदायिक दंगे होते रहे हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से विविधता के सही अर्थ पर (✓) निशान लगाएं।

- (क) दो व्यक्तियों के बीच असमानताएं
- (ख) समूह के सदस्यों में समानताएं
- (ग) समूहों के बीच असमानताएं

उत्तर—(ग) समूहों के बीच असमानताएं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से सामाजिक विविधता के सही उदाहरण पर (✓) निशान लगाएं।

- (क) पुरुष और महिलाओं के बीच स्वभावगत असमानताएं
- (ख) पड़ोसियों के बीच सम्पत्तिगत असमानताएं
- (ग) दो समूहों के बीच धार्मिक मान्यताओं संबंधी असमानताएं

उत्तर—(ग) दो समूहों के बीच धार्मिक मान्यताओं संबंधी असमानताएं।

प्रश्न 3. यह बताएं कि निम्नलिखित कथनों में से कौन गलत है। सही का प्रयोग सही के लिए और गलत का प्रयोग गलत के लिए करें।

- (क) एकता का अर्थ असमानताओं का न होना है।
- (ख) एकता विविधता का प्रतिकूल अर्थ है।

- (ग) एकरूपता एकता की एक आवश्यक शर्त है।
- (घ) विविधता में एकता शब्दों में एक विरोधाभास है।
- (ङ) यांत्रिक पारस्परिक निर्भरता एकरूपता पर आधारित है।

(च) एकता एकीकरण दर्शाती है।

उत्तर—(क) गलत, (ख) गलत, (ग) गलत, (घ) गलत, (ङ) सही, (व) सही।

प्रश्न 4. भारत में पाई जाने वाली विविधता के प्रमुख रूप कौन-कौन-से हैं?

उत्तर—क्षेत्रीय या भौगोलिक विविधता—उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में राजस्थान तक अनेक भौगोलिक विविधताएं हैं। कश्मीर में बहुत ठंड है तो दक्षिण भारतीय क्षेत्र बहुत गर्म है। गंगा का मैदान है, जो बहुत उपजाऊ है तथा इसी के किनारे कई प्रमुख राज्य, शहर, सभ्यता और उद्योग विकसित हुए। हिमालयी क्षेत्र में अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल; जैसे—बद्रीनाथ, केदारनाथ हैं, तो यह गंगा, यमुना, सरयू, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों का उद्गम स्थल भी है। देश के पश्चिम में हिमालय से भी प्राचीन अरावली पर्वतमाला है। कहीं रेगिस्तानी भूमि है, तो वहीं दक्षिण में पूर्वी और पश्चिमी घाट, नीलगिरी की पहाड़ियाँ भी हैं। यह भौगोलिक विविधता भारत को प्राकृतिक रूप से मिला उपहार है।

भाषायी विविधता—भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। प्राचीन-काल से ही भारत में अनेक भाषाओं व बोलियों का प्रचलन रहा है। वर्तमान में भारत में 18 राष्ट्रीय भाषाएं तथा 1,652 के लगभग बोलियाँ पाई जाती हैं। भारत में रहने वाले लोग इतनी भाषाएं व बोलियाँ इसलिए बोलते हैं, क्योंकि यह उपमहाद्वीप एक लम्बे समय से विविध प्रजातीय समूहों की पृष्ठभूमि रहा है। भारत में बोली जाने वाली भाषाओं को मुख्य रूप से चार भाषा-परिवारों में बांटा जा सकता है—

- ऑस्ट्रिक परिवार—इसके अंतर्गत मध्य भारत की जनजातीय-पट्टी की भाषाएं आती हैं; जैसे—संथाल, मुण्डा आदि।
- द्राविड़ियन परिवार—तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, गोंडी आदि।
- साइनो-तिब्बतन परिवार—आमतौर पर उत्तर-पूर्वी भारत की जनजातियाँ।
- इंडो-यूरोपियन परिवार—भारत में सबसे अधिक संख्या में बोली जाने वाली भाषाएं व बोलियाँ इण्डो आर्य-भाषा परिवार की हैं। जहां एक ओर पंजाबी, सिंधी भाषाएं व बोलियाँ बोली जाती हैं, वहीं दूसरी ओर मराठी, कोंकणी, राजस्थानी, गुजराती, मारवाड़ी, हिंदी, उर्दू, छत्तीसगढ़ी, बंगाली, मैथिली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी भाषाएं व बोलियाँ बोली जाती हैं।

भारतीय संविधान की 8 वीं अनुसूची में अब 22 भाषाएं, सूचीबद्ध हैं। ये भाषाएं असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिंधी, हिंदी, नेपाली, कोंकणी, मणिपुरी आदि हैं। इसके अतिरिक्त